International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 24-10-2020; Accepted: 09-11-2020; Published: 26-11-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 90-93

त्रिवेणी : वर्ण संघर्ष की कहानी

डॉ संजय कुमार
ललित नारायण मिथिला युनिवर्सिटी, दरभंगा, बिहार, भारत

प्रस्तावना

'कनैला की कथा' कहानी संग्रह की विकास यात्रा की शुरुआत १३०० ईसा पूर्व मे होती है तथा 1957 ईस्वी की स्वराज कहानी पर आकर रुक जाती है |इन कहानियों में राहुल सांकृत्यायन ने वर्ण-संघर्ष को नाटकीय रूप में प्रस्तुत किया है | जैसा कि सर्वविदित है राहुल सांकृत्यायन ऐतिहासिक वस्तुओं के विश्लेषण में प्रयास अनुभव प्राप्त किया था उन्होंने अपने पैत्रिक गाँव कनैला की ऐतिहासिक महत्व को जानने के लिए आसपास के तालाबों, डीह, एवं मठ आदि की खुदाई करवाई तथा उससे प्राप्त ईट,पत्थर,बर्तन एवं अन्य वस्तुओं से पुरातात्विक जानकारियां संगृहित किया गया तथा पता लगाने की कोशिश की गयी कि सम्बंधित कालों में यहाँ के लोगों कि जीवन-शैली, जीवन-संघर्ष एवं दिनचर्या कैसी थी ? पुरातात्विक वस्तुओं से प्राप्त प्रमाणिक जानकारियों एवं अपनी कल्पना शक्ति के मेल से राहुल सांकृत्यायन ने हिंदी के पाठकों के समक्ष कनैला की कथा कहानी को लाया जिनके पीछे राहुलजी का एक मात्रा उद्देश्य हिंदी के पाठकों को अँधा युग की प्रमाणित जानकारी उपलब्ध कराना था जिससे सामान्य पाठक भी अपने पूर्वजों की जीवन संघर्ष को सही-सही जान सके | उनकी विषम परिस्थितियों को समझ सके और गर्व कर सके कि वह जीवन-संघर्ष के विजेता के खानदान से ताल्लुक रखता है वर्ना जीवन-संघर्ष और वर्ण -संघर्ष में न जाने कितनी प्रजातियाँ संसार से मिट गई |

'कनैला की कथा' कहानी संग्रह की पहली कहानी 'त्रिवेणी' है त्रिवेणी से तात्पर्य है तीन वर्णों रूपी वेणी की जीवन संघर्ष की महागाथा| इन संघर्षों में बहुत-सी मानवीय जातियां विलीन ही हो गयी, कुछ की स्वरुप बदल गयी, कुछ अपना स्तित्व ही खो दिया तो कुछ अपनी स्तित्वा बचने के लिए खुद को विजेता में ही मिला दिया | उस समय संधि का न ही मौका मिलता था और न ही यह प्रचलन में था एक जन समूह दूसरे जन समूह पर पूरी ताकत से आक्रमण करता था विजेता विजित का नामोनिशान तक मिटा देना चाहता था | 'त्रिवेणी' में महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने किरात,निषाद और दामिल वर्णों की संघर्ष को जिवंत रूप में दिखाया है इस कहानी की कालावधि 1300 ईसा पूर्व है | राहुल सांकृत्यायन इस कहानी की भूमिका लिखते हुए कहते है, "ईसा पूर्व 13 वी शताब्दी का समय है | अभी सप्तसिंधु की भूमि पर आर्यों का पूरा अधिकार नहीं हो पाया था | उनमे धीरे- धीरे कबायली समाज टूटकर उसकी जगह सामंतवाद स्थापित होने जा रहा था | जमुना से पूर्व कौन लोग रहते है ? कौन-सी नदिया है, कैसी भूमि है, इसका सप्तसिंधु के आर्यों को कोई पता नहीं था" [1].

भारत के अन्वेषी इतिहारकर महापंडित राहुल सांकृत्यायन इस बात से सहमत है कि भारत की संस्कृति सैकड़ों बार परिवर्तित हुई है इसीलिए पूरी दृढ़ता से यह नहीं कहा जा सकता कि भारत की

स्थाई सभ्यता क्या है ? भारतीय संस्कृति को स्थाई रूप देने मे आर्यों का योगदान महत्वपूर्ण है परन्तु आर्यों के आगमन से पूर्व भी भारत के मूल निवासियों की रहन-सहन में सताधिक बार परिवर्तन हो चुकि है " दरअसल भारतीय जनता की संस्कृति का रूप सामासिक है और उसका विकास धीरे-धीरे हुआ है एक ओर तो इस संस्कृति का मूल आर्यों से पूर्व मोहन जोदारो आदि की सभ्यता तथा द्रविड़ों की महान सभ्यता तक पहुचता है दूसरी ओर इस संस्कृति पर आर्यों की बहुत ही गहरी छाप है जो भारत में मध्य एशिया से आए थे |" [2]

'त्रिवेणी' में एक साथ तीन-तीन जातियों (जनों) का वर्ग संघर्ष दिखाया गया है यद्यपि ये जन अलग-अलग थे परंतु इनके रहन-सहन, खान-पान, हथियार एवं जीवन शैली एक जैसी थी| राहुल सांकृत्यायन किरात, निषाद एवं दमिल को एक ही युग के मानते है| ये सभी जातियाँ ई.पूर्व 1300 के आसपास के हैं| किरात शब्द के अन्वेषण से पता चलता है की ये लोग स्वयं को सिंह के समान बहादुर समझते थे| अर्थात सिंह तात्कालिन परिस्थितियों में भी शक्ति का प्रतीक था| किरात शब्द का शाब्दिक अन्वेषण है किर अर्थात 'सिंह' तथा ति का मतलब 'लोग' अर्थात सिंह के समान बहादुर लोग| "किरात जन वैदिक युग से भी प्राचीन है और वैदिक ऋषि इनसे अवगत भी थे| वस्तुतः किरात प्राचीन संस्कृत ग्रंथो में हिमालय के कुछ क्षेत्रों और पूर्वोत्तर भारत में बसने वाली कुछ जातियों का नाम है या यजुर्वेद और अर्थवेद में इसका सबसे प्राचीन उल्लेख मिलता है| संभव है की मंगोल और मंगोल प्रभावित जन समुदायों के लिए प्राचीन शब्द रहा हो|" [3]

ये लोग नंगे रहते थे और फूस की बहुत छोटी-छोटी झोपड़ियों में रहते थे अभी कृषि - कार्य प्रचलन में नहीं था इसीलिए "सिंचाई के लिए पानी का उपयोग नहीं था और न यहाँ किसी प्रकार की खेती का ही चिन्ह था इसीलिए पानी का शोषण केवल धूप ही कर सकती थी |" [4]

अभी किरात के युग में कपड़ा का अविष्कार होना वाकी था इसीलिए "नर-नारियों के शारीर पर कोई वस्त्र नहीं था वस्त्र के नाम पर स्त्रियों के कमर से रस्सी के सहारे कुछ पत्तियाँ लटक रही थी जाड़े में संभव है चमरा पहनता हो अथवा अपनी सर्दी के सहने की शक्ति अग्नि के भरोसे गुजारा करते है | पुरुष बिलकुल दिगम्बर थे | उनके अपनी बाल खुले हुए और अधिकतर केश खुले हुए एवं जटयुक्त थे अधिकांश पुरुषों के मुख पर केस का इतना आभाव था दूर से देखने पर मालूम पड़ता था"[5] इनके "शारीर का रंग पिला था कद में मझोले थे शरीर का अंग - अंग साँचे में ढला मालूम होता था" [6]

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है कि किरात दामिल, निषाद यद्यपि डील-डौल, वर्ण आदि में थोड़ी - सी भिन्नता थी परन्तु सामाजिक व्यवस्था सभी में एक जैसी थी |जन समूह के सबसे ताकतवर व्यक्ति ही सरदार होते थे सरदार के पुत्र ही सरदार होंगे ऐसी परम्परा कायम नहीं हुई थी संघर्ष की स्थिति में स्त्री-पुरुष साथ - साथ लड़ते थे अभी स्त्रियाँ केवल चार दीवारी के अन्दर की वस्तु नहीं बनी थी | किरात के सरदार का परिचय देते हुए राहुल जी लिखते है | "एक लम्बे डील-डौल का असाधारण बलिष्ठ प्रौढ़ पुरुष मछलियों के ढेर के पास बैठा था उसके जटा वाले बालों में मोर और दूसरे पक्षियों के सुंदर पंख लगे हुए थे गले में भी हड्डियों की मालाएं पड़ी थी हांथ में छह हाथ के फल वाला भला था उसे देखते ही मालूम हो जाता था कि इस समाज में उसका विशिष्ट स्थान है |" [7] अन्य जनों के सरदार भी देखकर ही पहचाने जा सकते थे कि वह अपने जनों में विशिष्ट स्थान है | वर्तमान में भारत - नेपाल सीमा के मध्य एवं तराई में निवास कर रहे थारुओं के पूर्वज ही किरात थे |

आजकल थारुओं का रहन-सहन भी आधुनिक हो गया है भारत सरकार के अनेक विकासशील योजनाओं के फलस्वरूप इनके दैनिक क्रिया-कलाप ,पहनावा-ओढावा एवं इनके सोचने - समझाने में प्रयाप्त परिवर्तन हो गया है | इनका चेहरा मंगोलों से समय रखता है परन्तु ये लोग स्वंम को राजस्थान से विस्थापित मानता है यद्यपि इस बात को मानने का कोई ऐतिहासिक साक्ष्य ये लोग उपलब्ध नहीं करा पाते है | राजस्थान बालुओं से भरा हुआ क्षेत्र है | यहाँ पानी का आज भी
अभाव है | यह बात गले नहीं उतरती कि जहाँ संसार के सभी सभ्यता जल श्रोतों के किनारे विकसित हुवा वही इन थारुओं के पूर्वज जलविहीन राजस्थान में क्यों बसाने लगे |प्राचीन संस्कृतियाँ तो जंगलों एवं जल स्रोतों के सानिध्य में ही बसते थे | यहाँ उन्होंने कंद मूल, फल, लकड़ियाँ जल आदि सहज ही प्राप्त हो जाते थे इस संबंध में राहुल सांकृत्यायन का मत है की इनका पूर्वज किरात थे और जंगल में ही रहते थे परन्तु यह जरुरी नहीं कि आज वह जिस जंगल में रहते है इनके पूर्वज वाही रहते थे वल्कि वे लोग किसी अन्य जंगल में रहते होंगे निषादों के आक्रमण से ये लोग विस्थापित होकर वर्तमान में अवस्थित भू-भाग में आ गए होंगे | एक और बात आग का अविष्कार इनसे हजारों साल पहले हो चुका था और ये लोग जान चुके थे कि “सभी जंतु आग से डरते है, इसीलिए उसने आग को अपना रक्षा कवच बनाया था |” [8] ये किरात आग का उपयोग केवल अपनी सुरक्षा और अन्य जानवरों को केवल डराने के लिए ही नहीं करते थे बल्कि खाद्य वस्तुओं को भूनकर खाने की कला भी जान चुके थे |

ऐसे ही अवसर पर जब किरात नर-नारियाँ एवं सबल बच्चे पास के तालाब से मछलियाँ मारकर भूनकर खाया होगा तथा वनस्पतियों से तैयार सोमरस का पान किया होगा | सम्भवतः नशे में गायन और नृत्य भी हुआ होगा |लोग बाग के सो जाने पर निषादों का समूहित आक्रमण हुआ होगा | आक्रमणकारी सदैव योजनाबद्ध एवं संगठित होता है | उनकी सफलता की सम्भावना सर्वाधिक होता है क्योंकि वह योजनाबद्ध होता है जबकि आक्रान्ता अयोजनाबद्ध होता है सुरक्षात्मक होने के कारण आक्रमणकारी की ताकत का अंदाजा नहीं लगा पाता है |

ऐसे ही युद्ध की कल्पना करते हुए राहुल सांकृत्यायन अपनी कहानी संग्रह कनैला की कथा में लिखते है, “ इसी समय कोई जोर से चिल्ला उठा | जरा ही ढेर में बेसुद्ध सोये सारे स्त्री- पुरुष उठ खड़े हुए| बात-की- बात में सरदार की भाला उसके हाथ में था | किसी के हाथ में ताम्बे का, किसी के हाथ में नोक बनाया बाँस का भाला था | कुछ ने डंडे में अंतड़ी के सहारे बंधी पत्थर की गदा संभल ली, कितनो ने धनुष के तीर चढ़ा लिए | स्त्रियाँ भी डंडे या दूसरे हथियारों से सज गईं |डेरे के कुत्ते एक ओर से भूँकने लगे |यह जानने में देर नहीं लगी कि दक्खिन में मांगय की ओर से आदमी चिल्लाते हुएदौरे आ रहा है |सरदार ने आवाज दी |हथियारबंद सारे नर-नारी उस तरफ दौर पड़े |बहुत दूर नहीं बढे कि सनसनाती हुई वाण उनकी तरफ आने लगे |” [9] इस प्रकार अब इन स्थानों पर निषादों का अधिकार हो गया था किरातों का पशुधन एवम स्त्रियाँ अब निषादों की हो गयी |

जो लोग भागने में सफल रहे उन्ही के वंसज आज संभवतः थारू कहलाते है |

संदर्भ सूची

1. कनैला की कथा - राहुल सांकृत्यायन -पृष्ठ-1
2. संस्कृति के चार अध्याय - रामधरी सिंह दिनकर -पृष्ठ-11
3. www.hi.m.wikipedia.org
4. कनैला की कथा - राहुल सांकृत्यायन -पृष्ठ-2

5. कनैला की कथा - राहुल सांकृत्यायन -पृष्ठ-2
6. www.hi.m.wikipedia.org
7. कनैला की कथा - राहुल सांकृत्यायन -पृष्ठ-3
8. कनैला की कथा - राहुल सांकृत्यायन -पृष्ठ- 4
9. कनैला की कथा - राहुल सांकृत्यायन -पृष्ठ- 4